1 12th (LL) Date - 14.05.2020

चन्दा झा

हिनक मूलनाम चन्द्रनाथ झा छलनि, मुदा ई प्रसिद्ध भेलाह चन्दाझाक नामे। हिनक जन्म 1831 ई० मे भेलनि आ मृत्यु 1907 ई० मे। हिनक घर छलनि पिण्डारुछ (दरभंगा), किन्तु बादमे ओ अपन मातृक ठाढ़ी (मधुबनी) जा क' बसि गेलाह। ओ मिथिलाक अनेक राज - दरबारमे राजपण्डितक पद पर रहलाह। मुदा दरभंगाके जीवनक अधिकांश वर्ष बितलनि आ ओतहि रहि क' प्रसिद्ध भेलाह।

चन्दा झा मैथिली साहित्यक मध्ययुग आ आधुनिक युगक मिलन - बिन्दु पर ठाढ़ छथि। विषय वस्तु आ भाषाक स्तरपर ओ नव युगक श्रीगणेश कयलनि। हिनक मुक्तक कविता मे परिवर्तनक स्वर बेसी मुखर अछि। लोक नहि, मैथिली मे राम - कथा पर पहिल पोथी इएह लिखलनि। मैथिलीक पहिल महाकाव्य हिनके लिखल अछि जकर नाम थिक मिथिलाभाषाक रामायण।

एकर अतिरिक्त गीत सप्तशती तथा गीतसुधा नामक पोथी सेहो प्रकाशित अछि। हिनक मृत्युक बाद मुक्तक कविताक संकलन छपल अछि - एकटा मेहगवानी संग्रह आ दोसर चन्द्र पद्यावली। एकर परिवर्धित संस्करण मैथिली अकादमी, पटना से चन्द्र - रचनावली नाम सँ प्रकाशित भेल अछि। हिनक कविताक भाषा सरल आ सरस ओ हेरत अछि। ई अनुसंधानकर्त्ता तथा अनुवादक सेहो छलाह।

रानी मिश्रा
मैथिली विभाग
R. N College
pandaul. Madhuban

Scanned with CamScanner